हिंदी गद्य साहित्य की सशक्त विधा है रेखाचित्र

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र

रेखाचित्र मानव-मन की एक ऐसी रचना है, जिसमें प्रतिपल भावतरंगें विविध रूप एवं रंगों से तरंगायित करती है। कभी सजल कोमल हास बिखेरती है तो कभी सागर-सी गर्जना लिए संघर्ष से टकराती है। ऐसी अनुभूतियों को कला के माध्यम से शब्दों में ढालना ही रेखाचित्र है। मनुष्य द्वारा अनुभूत भावों की रेखाओं, रंगों, गतियों, ध्वनियों या शब्दों के माध्यम से हुई बाह्य अभिव्यक्ति कला है रेखाचित्र। रेखाचित्र के संदर्भ में कहा गया है- " रेखाचित्र का तात्पर्य होगा, रेखाओं के माध्यम से किसी जीव, पदार्थ या वस्तु के आकार को खींचना। रेखाचित्र चित्रकला का शब्द है। वस्तुतः रेखाचित्र एक ऐसी चित्रकला है. जिसमें रंगों का प्रयोग नहीं होता है और न मोटाई - चौड़ाई ही होती है, अपितु शब्दों के माध्यम से अपने अभिप्रेत भाव को मुखर बना देती है।"

रेखाचित्र गद्य साहित्य की स्वतंत्र विधा है। रेखाचित्र को स्वतंत्र विधा रूप में स्थापित करने का श्रेय पद्मसिंह शर्मा कृत 'पद्म पराग' को दिया जाता है। श्री सत्यपाल चुघ ने 'रेखाचित्र' के संदर्भ में कहा है कि "साहित्य का वह गद्यात्मक रूप, जिसमें एकात्मक विषय विशेष का शब्द रेखाओं से संवेदनशील चित्र प्रस्तुत किया जाता है, रेखाचित्र या शब्द चित्र है। "रामवृक्ष बेनीपुरी, यशपाल आदि ने इस विधा को 'शब्द चित्र' का समर्थन किया है। श्री बचन सिंह का अभिमत है कि "मुख्यतया बाह्य रेखाओं पर आधारित रहने के कारण लक्षित चित्रों को रेखाचित्र का नाम दिया जा सकता है। रेखाचित्रों में आलंबन के रूप सौंदर्य और उसकी चेष्टाओं आदि को संकेत दिया जाता है।"

श्री रामवृक्ष बेनीपुरी निर्विवाद रूप से हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ रेखाचित्रकार माने जाते हैं। इनके रेखाचित्रों में हम सहज सरल भाषा-शैली में सिद्धहस्त कला कहीं भी देख सकते हैं। उन्होंने रेखाचित्र की परिभाषा देते हुए कहा है- "ये चलते-फिरते

आदमियों के शब्दचित्र हैं।" महान साहित्यकार बनारसीदास चतुर्वेदी के अनुसार- "रेखाचित्र खींचना एक कला है। थोड़ी सी रेखाओं के द्वारा एक सजीव चित्र बना देना किसी कुशल कलाकार का ही काम हो सकता है।"

संस्मरण और रेखाचित्र में अन्तर

स्वभावतः संस्मरण और रेखाचित्र की पारम्परिकता अनेकशः उन्हें एक रूपता के स्तर पर पहुँचाकर एक ही विधा की भंगिमाओं या विधियों के रूप में विज्ञापित करती हैं। सच तो यह है कि संस्मरण और रेखाचित्र वस्तु और शिल्प के अभिनव उपादान के रूप में परस्पर पूरक रहकर दूर तक समानान्तर विकसित हुए हैं तथापि दोनों में साहित्य रूपगत मौलिकता भिन्नता है। संस्मरण का विषय घोर वास्तविक और लेखक के अपने अनुभव का अंश होता है, जबकि रेखाचित्र का पात्र काल्पनिक भी होता है। संस्मरण के समस्त संदर्भ अथवा सम्पूर्णतः व्यक्त स्वरूप का ही कोई समर्थ अर्थ या प्रभाव होता है। वहीं रेखाचित्र में हर रेखा और अभिव्यक्ति की भंगिमा मुखर हो उठती है। सर्वोपरि संस्मरण आत्मपरक अधिक होता है और उसमें लेखक के अपने व्यक्तित्व का संस्मरण संदर्भ में समान होता है। रेखाचित्र में कलाकार की सी तटस्थता का बोध होता है। संस्मरण लेखक उन्मुक्त मन का वातायन खोलता है। वस्तुतः रेखाचित्र की आत्मा ही कला है, जबकि संस्मरण में सपाट अभिव्यक्ति भर आवश्यक है। दोनों में स्वतंत्र साहित्य के रूप में पर्याप्त भिन्नता भी है, फिर भी किसी संस्मरण से रेखाचित्र और रेखाचित्र से संस्मरण के अंश अलग करना सहज नहीं है। अतः दोनों में अन्तर करने के लिए रचना के मर्म की पहचान और गहरी दृष्टि आवश्यक है।

रेखाचित्र का स्वरूप

रेखाचित्र का शाब्दिक अर्थ 'रेखाओं का चित्र' है, किंतु इस विधा का शाब्दिक अर्थ से कोई संबंध नहीं है। रेखा जीवन को स्थूल रूप से सूक्ष्मता की अभिव्यंजना करती

है। रेखा- चित्रकार शब्दों के माध्यम से व्यक्तित्व का प्रकाशन करता है। कुछ आचार्यों ने कहानी की सीमा में ही रेखाचित्र को समाहित करने की चेष्टा की है, किंतु ये दोनों स्वतंत्र विधा हैं।

रेखाचित्र में अनुभूत चारित्रिक विशेषताओं को मार्मिकता से अभिव्यक्त किया जाता है। रेखाचित्र का विषय, वस्तु विशेष भी हो सकती है। कहानी में पात्र का होना अनिवार्य है।रेखाचित्र में स्थिर प्रकृति होती है, जबकि कहानी में गतिशीलता। रेखाचित्र में सांकेतिकता को महत्व दिए जाने के कारण, इस विधा को कहानी में समाविष्ट नहीं किया जा सकता है।

रेखाचित्र का उद्भव और विकास

कुछ समीक्षक अँग्रेजी के स्कैचेज से रेखाचित्र का उद्भव मानते हैं। यह कथन उपयुक्त नहीं है क्योंकि शब्द-चित्रों की प्रवृत्ति भारतीय साहित्य परंपरा के आरंभ से चली आ रही है। काव्यों के माध्यम से इसका उद्भव हो चुका था। गद्य में इसका आरंभ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के चरित्र-प्रधान निबंधों से हुआ। श्री भारतेन्दु ने 'कालीदास' रामानुचार्य, जयदेव, शंकराचार्य, बल्लभाचार्य, पुष्पदन्ताचार्य, सुकरात, सूरदास, बहादुर, राजाराम शास्त्री, महाराजाधिकार आदि निबंधों में कहीं-कहीं रेखाचित्र के तत्वों का समावेश किया है। इन निबंधों को स्वतंत्र रूप से रेखाचित्र नहीं कहा जा सकता है।

प्रथम रेखाचित्र के संदर्भ में श्री कृपाशंकर सिंह ने लिखा है- "सन् 1939 में निराला जी का 'कुल्लीभाट' प्रकाशित हुआ, जिसे एक प्रकार से आत्मचरित भी कहा जा सकता है। इसमें 'कुल्लीभाट' के चरित्र की रेखायें अपनी बाह्य आकृति को लेकर उभरी हुई है। इनकी शैली और गुण रेखाचित्र के अंतर्गत ही आते हैं। इसी क्रम में 'निराला' ने सन् 1941 में 'बिल्लेसुर बकरिहा' नाम की एक और कड़ी जोड़ दी।

रेखाचित्र के विकास में श्रीमती महादेवी वर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, देवेंद्र सत्यार्थी, डॉ प्रेम नारायण टण्डन, बनारसीदास चतुर्वेदी।

श्रीराम शर्मा, डॉ सुरेश कुमार जैन, श्रीप्रकाशचन्द्र गुप्त आदि का महती योगदान रहा है।

रेखाचित्र साहित्य के प्रकार

प्रवृत्ति के अनुसार रेखाचित्र के निम्नांकित प्रकार हैं-

सम्वेदनात्मक, स्नेह-समन्वित, श्रद्धा भक्ति, मनोवृत्ति प्रधान, प्रकृति सौंदर्यमूलक, तथ्य प्रधान, ऐतिहासिक, राष्ट्रीय भावना, व्यक्ति प्रधान।

वर्णन की शैलियाँ निम्न रूप में हो सकती हैं-

कथात्मक, निबंधात्मक, वर्णनात्मक, तरंगित, आत्मकथात्मक, डायरी, संबोधन, सूक्ति, संवाद। शैली के भी विविध रूप पाये जाते हैं-

भावात्मक, लाक्षणिक, चित्रात्मक, दार्शनिक, सम्वेदनात्मक, आलंकारिक।

प्रमुख रेखाचित्रकार

पंडित श्रीराम शर्मा ने 'बोलती प्रतिमा' नामक कृति में रेखाचित्र प्रस्तुत किये हैं- इसमें बोलती प्रतिमा, ठाकुर की आन, हरनामदास, वरदान, पीतांबर, फिरोजाबाद की कालकोठरी, चन्दा, वसीयत, रतना, अपराधी, इकाई का सौदा, रतना की अम्मा तथा इत्यलम् शीर्षक से रेखाचित्र प्रस्तुत किये हैं। उनके रेखांकन के संदर्भ में श्री कृपाशंकर सिंह ने लिखा है- "इन रेखाचित्र में हमें लोक जीवन की झांकी के साथ ही साथ अदम्य साहसिकता, राष्ट्रीयता, कर्तव्यनिष्ठा, समाज में व्याप्त रूढ़ियों की निंदा और उन्हें उखाड़ फेंकने की तत्परता आदि के चित्रण बड़ी प्रभावी शैली में प्राप्त होती है।"

हिंदी रेखाचित्र में श्रीमती महादेवी वर्मा का नाम विशिष्ट स्थान रखता है। उनके द्वारा लिखित 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति रेखाएं' तथा 'पथ के साथी' इस विधा की प्रमुख कृतियाँ हैं। महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में उनके जीवन की स्मृतियाँ रेखांकन कर पायी है। जीवन की अनुभूतियों के रंग-रूप को तरलता के साथ रेखाओं में ढालने का अथक प्रयास किया गया है। उन्होंने इन रेखाचित्रों में नारी-वेदना के मार्मिक अर्थों को

अभिव्यक्त किया है। नारी का विद्रोह अनेक स्थलों से उभर आया है- "स्त्री अपने बालक को हृदय से लगाकर जितनी निर्भर है,उतनी किसी और अवस्था में नहीं। वह अपनी संतान की रक्षा के समय चण्डी है, वैसी और स्थिति में नहीं।"

महादेवी वर्मा ने इन रेखाचित्रों में समाज के निम्न घटकों से चरित्र उठाये हैं। ऐसे दीन हीन व्यक्तियों का स्पर्श किया है, जिसमें मनुष्यता है। वेदना की टीस पाठकों को झंकृत किये बिना नहीं रहती। सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने 'कुल्लीभाट' एवं 'बिल्लेसुर बकरिहा' रेखाचित्र लिखें हैं। इसमें अस्पृश्य वर्ग के प्रति मार्मिक सम्वेदना व्यक्त की गई है। इसकी शैली में पर्याप्त संवेदनात्मकता और चुटीलापन है। वर्णन में वास्तविकता स्पष्ट है। निराला ने अपने रेखाचित्रों में ग्रामीण जीवन की झांकी उपस्थित की है।

श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी के रेखाचित्रों में - रामलाल, चक्करदार चोरी, एक पुरानी कथा, नाम, बंदर की शिखा आदि श्रेष्ठ हैं। काका कालेलकर के गाँधी संस्मरण और विचार, कृष्णचंद्र के फूल और पत्थर, परिपूरणानंद के बीती यादें, कृष्णा सोबती के हम हशमत, शंकरदयाल सिंह के कुछ ख्यालों में कुछ ख्वाबों में, कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर के महके आँगन चहके द्वार, माटी हो गई सोना, बाजे पायलिया के घुँघरू, क्षण बोले कण मुस्काये आदि रेखाचित्रकारों ने रेखाचित्र विधा को अत्यंत समृद्ध किया है।

श्री रामवृक्ष बेनीपुरी रेखाचित्रकारों में विशिष्ट स्थान रखते हैं। 'लालतारा' उनके सब चित्रों का पहला संग्रह है। इसके अतिरिक्त प्रमुख रेखाचित्रों में 'माटी की मूरतें', 'गेहूँ और गुलाब', 'मील के पत्थर,' रेखाचित्रों के संकलन प्रकाशित हुए। इसमें- हलवाहा,यह और वह, कुदाल,शहीदों की चिता पर, हँसिया और हथौड़ा, डुगडुगी, नई संस्कृति की ओर, इन्कलाब जिंदाबाद, कस्मै देवाय हविषा विधेम, आँधी में

चलो, कुछ क्रांतिकारी विचार, जवानी, रेलगाड़ी, दीपदान, बलदेव सिह, बालगोबिन भगत, बुधिया, सरजू भैया आदि हैं।

दीपदान में अभावग्रस्तता का मार्मिक चित्रांकन हुआ है-

"माँ आज अपने घर में दीये नहीं जलेंगे?"

-माँ चौकी! चिकनी मिट्टी सानी। दीये गढ़े। अंचल से चीकड़े काड़ कर बत्ती जलाई।

-किंतु तेल!

-माँ की आँखें छलछला उठीं, बरस पड़ी। सामने पड़े दीये उससे भर चले। फिर गीली मिट्टी के इन स्नेहपात्रों को मिट्टी के रूप में परिणित होने में कितनी देर लगती! "

रामवृक्ष बेनीपुरी रचित 'माटी की मूरतें' में एक ऐसे व्यक्ति का चित्र उपस्थित किया गया है,जो हलवाहा है। वह कर्मठ और ईमानदार है. फिर भी जीवन के अंतिम वर्षों तक वह जीवन की विषमताओं से ही जूझता रहा और उसी में मर गया 'पड़े- पड़े मन ऊब जाता है, बबुआ! मगर ने जवाब दिया। इनके रेखाचित्रों की श्रेष्ठता का अनुमान मैथिलीशरण गुप्त के इस कथन से लगाया जा सकता है- "लोग माटी की मूरतें बनाकर सोने के भाव बेचते हैं, पर बेनीपुरी ने सोने की मूरतें बनाकर माटी के मोल बेच रहे हैं। श्री गुप्त जी का यह कथन बेनीपुरी के उत्कृष्ट रेखाचित्र 'माटी की मूरतें' के संदेश में है।

श्री प्रकाशचन्द गुप्त ने अपने रेखाचित्र' साहित्य 'के संदर्भ में लिखा है- 'मेरे पहले संग्रह रेखाचित्र ' की दिल्ली रेडियो पर आलोचना करते हुए अज्ञेय जी ने कहा था, मैंने मानवता का चित्रण न करके खण्डहरों का चित्रण किया था। यह सच था, लेकिन मानवता से प्रेरणा पाकर ही मैंने अपने विचार और भाव ऐतिहासिक भग्नालशेषों पर आरोपित किये थे। गुप्त जी ने' अल्मोड़े का बाजार 'आदि रेखाचित्र लिखे, जिसमें सामाज्यवादी शोषण के प्रति विद्रोह का स्वर प्रखर था। उनके कुछ रेखाचित्र 'पुरानी स्मृतियाँ और नये स्केच' शीर्षक से लिखे मिलते हैं । इस संकलन में

ताई, गाँव की सांझ, रानीखेत की रात, कुली, अन्धी, बंगाल का अकाल, पेट्रोल पंप, नया नगर,नल, इक्केवाला, सीमांत पूर्व, अमलतास, एक डायरी के पन्ने। नानी का घर, बुद्धिजीवी, शेरशाह की सड़क, गांधी के प्रति, लालाजी कलाकार, जागते रहो, मसूरी,अपराजित, उस पार, लेटर बाक्स, दरवाजा, खण्डहर, राजा की मंडी, कश्मीरी दरवाजा आदि रेखाचित्र संकलित हैं। इनके रेखाचित्र परंपरा से हटकर आधुनिकता का बोध लिए हुए हैं। आज के मानव के अंतर्गत व्यथा को सफलता के साथ चित्रित किया है। करुणा, सहानुभूति तथा राष्ट्रीयता के भाव-चित्र गहरी छाप छोड़ते हैं। इन रेखांकनों में नवीन दृष्टि 'लेटर बाक्स, पेट्रोल पंप आदि के द्वारा अभिव्यक्ति हुई है।

श्री बनारसीदास चतुर्वेदी के रेखाचित्र इस विधा के विकासात्मक शब्दचित्र हैं, जिनके द्वारा इस विधा के क्षेत्र में नूतन द्वार खुल पाये हैं। श्री चतुर्वेदी ने रेखाचित्रों का माध्यम राष्ट्र एवं परराष्ट्र के शीर्षस्थ राजनीतिज्ञ, साहित्यकार, कलाकार, दार्शनिक और पत्रकार आदि को बनाया। इनके रेखाचित्र - आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, श्रद्धेय बाबू राजेन्द्र जी, श्री जवाहरलाल नेहरू, श्री देवमित्र धर्मपाल, श्री निवासदास शास्त्री, चिंतामणि, आचार्य गिडवानी, कवि रत्नाकर से बातचीत, श्री प्रेमचंद के साथ दो दिन, श्री सम्पुर्णानन्द, श्री राहुल सांकृत्यायन, श्रीराम शर्मा, श्री बालकृष्ण नवीन, एक सिपाही, सम्पादक की समाधि, लल्लू कब लौटेगी, मनसुखा और कल्ला, दीनबंधु ऐंड्रयूज आदि शीर्षकों से हैं। इन रेखाचित्रों में देश - विदेश के उन्नायकों का व्यक्तित्व - विश्लेषण हुआ है।

श्री देवेन्द्र सत्यार्थी 'रेखाचित्र' में भावात्मक शैली के प्रमुख लेखक हैं। इनके रेखाचित्रों का संकलन 'रेखायें बोल उठीं' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। इसमें आज मेरा जन्मदिन है, अच्छे-भले आदमी की बात, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, चिर नूतन चित्र एवं सौंदर्यबोध नामक रेखाचित्र हैं। श्री सत्यार्थी के संदर्भ में समीक्षक श्री कृपाशंकर सिंह ने लिखा है- "अपने इन भावात्मक रेखाचित्रों में सत्यार्थी जी भावों के क्रम का निर्वाह

नहीं कर पाये हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक कुछ कहने के लिए उतावला है, लेकिन वस्तुतः वह कहना क्या चाहता है, इसे स्वयं निश्चित नहीं कर पाता। हाँ, कुछ चित्र अवश्य सुन्दर हैं और रेखाचित्र साहित्य में एक नई शैली को जन्म देते हैं।"

श्री प्रेम नारायण टण्डन का 'रेखाचित्र' शीर्षक से संकलन प्रकाशित हुआ, जिसमें मैं पत्रकार हूँ, अफसर, हिन्दी लेखक, कूकी, रोजी तथा हिन्दी नारी आदि संकलित हैं। श्री शिवपूजन सहाय की 'वे दिन वे लोग', कन्हैयालाल मिश्र की 'जिन्दगी मुस्कुराई', 'माटी हो गई सोना' तथा 'दीप जले शंख बजे', विनय मोहन शर्मा की 'रेखा और रंग, सत्यवती मलिक की 'अमिट रेखायें', शान्तिप्रिय द्विवेदी की 'स्मृतियाँ और कृतियाँ ',उपेन्द्रनाथ अश्क की 'रेखायें और चित्र', 'मन्टो मेरा दुश्मन', 'ज्यादा अपनी कम परायी ', जगदीश चन्द्र माथुर की' दस तस्वीरें", 'जिन्होंने जीना जाना ', डॉ नागेन्द्र ने 'चेतना के बिम्ब' एवं सेठ गोविन्ददास की' स्मृति कण', 'चेहरे जाने पहचाने' , दिनकर कृत' लोकदेव नेहरू', सत्य जीवन लिखित' भारतीय की एलबम'. ओंकार शरद कृत 'लंकामहाराजिन', कैलाशनाथ काटजू लिखित' 'मैं भूल नहीं सकता,' हरिभाऊ उपाध्याय की कृति 'मेरे हृदय देव', महेन्द्र भटनागर की 'विकृत रेखायें ', पद्मिनी मेनन की 'चाँद', शिवानी की 'आमादेर शान्ति निकेतन' एवं हरिवंशराय बच्चन की 'नये पुराने झरोखे', विष्णु प्रभाकर के रेखाचित्र जाने अनजाने, कुछ शब्द कुछ रेखायें, हँसते निर्झर दहकती भट्टी आदि अनेक उत्कृष्ट कृतियाँ रेखाचित्र विधा को गद्य साहित्य में अतीव प्रसिद्धि देने में सक्रिय भूमिका का निर्वहन किया है। हिन्दी जगत के अन्य सुप्रसिद्ध रेखाचित्रकारों में- सियारामशरण गुप्त, प्रभाकर, सत्यवती मलिका, हरिशंकर शर्मा, अन्नपूर्णा, प्रभाकर माचवे, फणीश्वरनाथ रेणु, भगवत शरण उपाध्याय, भदन्त, आनन्द कौशल्यायन, विजयलक्ष्मी पंडित, कैलाशनाथ काटजू, अमृतराय,रघुवीर सहाय एवं विद्या माथुर के नाम उल्लेखनीय हैं।

छायावादोत्तर युग रेखाचित्र का उत्कर्ष काल

छायावाद युग के बाद का साहित्यिक काल रेखाचित्र विधा की दृष्टि से उत्कर्ष काल ही कहा जायेगा। इस युग में रेखाचित्र विधा के विकास में पत्र-पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा। सन् 1939 में 'हंस' पत्रिका का रेखाचित्र विशेषांक प्रकाशित हुआ। इस अंक में 15 साहित्यकारों द्वारा लिखित रेखाचित्र सम्मिलित थे। सन् 1940 में बनारसीदास चतुर्वेदी के संपादन में 'मधुकर' का रेखाचित्र विशेषांक प्रकाशित हुआ। इसके अतिरिक्त, माधुरी (लखनऊ), विशाल भारत (कलकत्ता),सरस्वती (प्रयाग). सुधा (लखनऊ) तथा हंस (वाराणसी) आदि सुप्रतिष्ठित पत्रिकाओं में रेखाचित्र विधा को स्थान मिला।

आधुनिक युग में संस्मरणात्मक शैली में रेखाचित्र लिखे गये। ऐसे रेखाचित्रकारों में सत्यजीवन वर्मा, ओंकार शरद, इन्द्र वाचस्पति, रायकृष्ण दास, कुन्तल गोयल, पद्मिनी मेनन, लक्ष्मीनारायण 'सुधांशु', शिवानी, महेन्द्र भटनागर, दिनकर जी का नाम अविस्मरणीय है।

आज भी हिन्दी साहित्य को समर्पित पत्रिकायें यथा - आजकल,हिन्दी साहित्य भारती, गगनांचल, हिन्दी कौस्तुभ, हिन्दी भाषा भारती,संस्कृति, सम्पर्क भाषा भारती, वैचारिकी, जयतु हिन्दी विश्व, सौरभ, पुस्तक संस्कृति, वसुधा,साहित्य का विश्व रंग, भारत भवन इत्यादि हिंदी साहित्य की अन्य विविध विधाओं के साथ रेखाचित्रों के लेखकों को भी सम्मानित स्थान प्रदान कर रहीं हैं।

इस प्रकार समग्र विवेचन के आधार पर यही कहा जा सकता है कि अभी भी इस विधा में नूतन सम्भावनाओं की अपेक्षा है। यह विधा अपने आप में इतनी व्यापक है कि इससे अनेक शैलियों का जन्म हुआ है और अल्प समय में इस विधा ने आशातीत सफलता प्राप्त की है।

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र, 117 आदिलनगर, विकासनगर, लखनऊ 226022